VII

अर्थशास्त्र में परीक्षण

अर्थशास्त्र में अर्जित ज्ञान की माप करने के लिए जिन जाँचों का प्रयोग किया जा सकता है, उनका विस्तृत विवेचन नीचे दिया जा रहा है–

(अ) मौखिक परीक्षण–यह परीक्षण चारित्रिक रूप से वैयक्तिक होता है। इसमें बालकों को मौखिक प्रश्न दिये जाते हैं और इन प्रश्नों द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया जाता है कि बालकों ने पाठ को सीखा है या नहीं। इसमें छात्र परीक्षक के समक्ष उसके प्रश्नों का उत्तर देते हैं जिससे परीक्षक उनके गुणों, जैसे–अभिव्यंजना, आत्म-विश्वास आदि की भी जाँच कर लेता है। अर्थशास्त्र का शिक्षक इनका प्रयोग कक्षा-शिक्षण में किसी भी समय कर सकता है। इस प्रकार वह पढ़ाये हुए पाठ की सफलता का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

(ब) नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ परीक्षण–मनोविज्ञान ने शिक्षा को महत्त्वपूर्ण योग प्रदान किया है। मनोवैज्ञानिकों ने परीक्षण की कुछ नवीन प्रणालियों का प्रयोग समस्त विषयों में किया है। इन प्रणालियों का उपयोग आजकल लोकप्रिय हो गया है। वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा किसी विषय या निष्कर्ष की वस्तुनिष्ठता की जाँच की जाती है। इसमें छोटे-छोटे प्रश्न किये जाते हैं और उनके उत्तर भी संक्षिप्त होते हैं। इस प्रकार की परीक्षा में लिखना भी कम पड़ता है। अर्थशास्त्र-शिक्षण में वस्तुनिष्ठ जाँचों का प्रयोग निबन्धात्मक परीक्षण के साथ-साथ प्रचुरता से किया जाना चाहिए क्योंकि इन जाँचों द्वारा सत्यासत्य, तथ्य-ज्ञान, विचार-ज्ञान तथा निर्णय-शक्ति की परख की जा सकती है। इस प्रणाली में वे सब गुण विद्यमान हैं, जो एक उत्तम परीक्षा में होने चाहिए। वस्तुनिष्ठ परीक्षण के निम्नलिखित गुण हैं–

(1) वस्तुनिष्ठता (Objectivity)–वस्तुनिष्ठ परीक्षण में प्रश्न इस प्रकार निर्मित किये जाते हैं कि उनके उत्तर संक्षिप्त होते हैं और प्रायः उनका केवल एक ही सही उत्तर सम्भव होता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का एक व्यक्ति या विभिन्न व्यक्तियों द्वारा अंकन किये जाने पर अंकों में कोई विभिन्नता नहीं पायी जाती है अर्थात् उसके द्वारा प्रदान किये गये अंक समान रहते हैं। इस प्रकार वस्तुनिष्ठ परीक्षण में व्यक्तिगत निर्णय, विचार, धारणा, मनोदशा, मानसिक स्तर आदि के लिए स्थान नहीं होता है।

(2) वैधता (Validity)–वस्तुनिष्ठ परीक्षण का एक गुण यह है कि उनमें वैधता पायी जाती है। वह उसी निर्धारित योग्यता को मापने में समर्थ है, जिसके लिए इसका निर्माण किया जाता है।

(3) विश्वसनीयता (Reliability)–विश्वसनीयता का अभिप्राय यह है कि परीक्षा द्वारा होने वाला मापन प्रायः संगत या स्थिर रहता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षण में यह गुण पाया जाता है। **रैमर्स** तथा **गेज** (Remmers and Gage) का कथन है, "वस्तुनिष्ठ परीक्षा या छोटे उत्तरों वाले परीक्षण द्वारा समान अंक प्रदान किये जायेंगे, चाहे उसका कोई भी व्यक्ति अंकन क्यों न करे और चाहे उसके द्वारा विभिन्न अवसरों पर अंकन क्यों न किया जाये।"

(4) विस्तृत प्रतिनिधित्व–वस्तुनिष्ठ परीक्षण द्वारा पाठ्यक्रम के बहुत बड़े भाग का प्रतिनिधित्व किया जाता है। **ग्रीन** तथा **अन्य** ने लिखा है, "वस्तुनिष्ठ परीक्षण अपनी प्रकृति के अनुसार इतने विस्तृत क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है कि उसके प्रयोग द्वारा जो परिणाम प्राप्त होते हैं, वे घनिष्ठ रूप से उन परिणामों के समान होते हैं जो किसी विषय में छात्र के कार्य की जाँच करके प्राप्त होते हैं।"

Scanned with CamScanner

(5) अंकन की सरलता (Easy Scoring)—वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के अंकन में निबन्धात्मक परीक्षणों की भाँति परिश्रम, धैर्य एवं बुद्धि की अधिक आवश्यकता नहीं है। इनका कुञ्जी की सहायता से कम समय में एवं सुगमता से अंकन हो जाता है। हम इसकी पुष्टि **राइटस्टोन** के शब्दों में कर सकते हैं, "छोटे स्तर वाले परीक्षणों में अंकन कुञ्जी की सहायता से होता है जिसमें सही उत्तरों की तालिका दी रहती है। अतः उसमें किसी प्राविधिक कुशलता की आवश्यकता नहीं होती है।"

(6) समय की बचत (Economy of Time)—यद्यपि वस्तुनिष्ठ परीक्षण के निर्माण में अधिक समय लगता है, परन्तु इसमें छात्र कम समय में बहुत से प्रश्नों का उत्तर देने में समर्थ होते हैं। इसके अतिरिक्त परीक्षक थोड़े समय में बहुत-से प्रश्नों को जाँचने में समर्थ होता है।

(7) विभेदीकरण (Discrimination)—एक अच्छे परीक्षण का यह भी गुण होता है कि वह प्रतिभावान एवं निम्न योग्यता वाले छात्रों के भेद को स्पष्ट करे। वस्तुनिष्ठ परीक्षण में यह गुण भी पाया जाता है। इसके द्वारा प्रतिभाशाली एवं मन्द-बुद्धि बालकों को छाँटा जा सकता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के भेद—ये परीक्षण निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं—

(अ) औपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षण या प्रमापीकृत वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Formal objective type tests or standardized objective type tests)।

(ब) अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षण या शिक्षक-निर्मित वस्तुनिष्ठ परीक्षण (Informal objective type tests or teacher-made objective type tests)।

औपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षण तथा अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में अन्तर केवल इतना है कि प्रथम का प्रमापीकरण (Standardization) करके दिया जाता है और इसका प्रयोग सामान्य रूप में किया जा सकता है। इनका निर्माण विशेषज्ञों द्वारा होता है परन्तु अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का प्रयोग सामान्य रूप से नहीं दिया जा सकता। इनका प्रयोग विशेष स्थानों पर विशेष स्थितियों में ही हो सकता है। ये दोनों परीक्षण एक-दूसरे से पूरक हैं।

Scanned with CamScanner